# कामायनी : उपभोक्तावादी विश्व में

प्रस्तुति : **पूजा गुप्ता**

जयशंकर प्रसाद आधुनिक युग में लिख रहे थे। वे 'कामायनी' के माध्यम से पौराणिक युग के यथार्थ व्यक्त न करके अपने युग के यथार्थ व्यक्त कर रहे थे। अपने युग की अच्छी-बुरी प्रवृत्तियों के आधार पर ही उन्होंने इड़ा, श्रद्धा और मनु के चरित्र का गठन किया।

'कामायनी' पर एक महत्वपूर्ण चर्चा आज से लगभग 65 वर्ष पहले मुक्तिबोध द्वारा हुई थी। इसके बाद भी इस महाकाव्य पर कई कोणों से विचार आते रहे हैं। यह भी कहा गया कि 'कामायनी' एक अपठनीय पुस्तक है। इस बीच दुनिया में बहुत कुछ घट चुका है। 21वीं सदी में सोचा जा सकता है कि यह एक ऐसा महाकाव्य है जिसपर बार-बार चर्चा होनी चाहिए। हमने प्रयास किया है कि 'कामायनी' पर चर्चा फिर शुरू हो, क्योंकि बहुतों को लग सकता है कि मनु, श्रद्धा और इड़ा ऐसी प्रवृत्तियों के प्रतिनिधि हैं जो आज भी मौजूद हैं और उनके बीच संघर्ष चल रहा है।

मुक्तिबोध मनु को वेदकालीन नहीं मानते। मनु में अधिक सुख का लोभ था। आज के संदर्भ में लोभ बढ़-चढ़ गया है, भय भी। लोग उपभोक्ता संस्कृति में बाजार-निर्भर हो रहे हैं। ऐसे में मानवता का क्षय